'संसद से सड़क तक' में जनवादी चेतना

डॉ. राजेंद्र सोमा घोडे
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
पुणे विष्वविद्यालय, पुणे–07 भ्रमणध्वनी
E-mail-rajughode@gmail.com.

सारांश

धूमिल ने अपनी कविताओं में जनतांत्रिक व्यवस्था की वास्तविकता का पर्दाफाश किया है। उन्होंने एक ओर आम आदमी किसान एवं मजदूरों की स्थितियों या उनके शोषण का वास्तविक अंकन किया है। तो दूसरी ओर उनको शोषण के खिलाफ क्रांति करने के लिए प्रेरित किया है। जिंदगी के जलते हुए अनुभवों को धूमिल की विचारशीलता ने कविताओं के रूप में ढाला है। अपने काव्य के माध्यम से उन्होंने शोषित व्यवस्था के प्रति तीव्र आक्रोश, आजादी एवं मोहभंग, आम आदमी और ग्रामीण जीवन, किसान एवं मजदूरों की स्थिति, भाषा विवाद एवं जन भाषा आदि कई रुपों के माध्यम से जनवादी चेतना अभिव्यक्त की गई है। उन्होंने व्यवस्था के इस शोषण के प्रति विद्रोह व्यक्त करते हुए सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक आदि विषमताओं पर प्रकाश डालते हुए जनतांत्रिक व्यवस्थ पर कड़ा प्रहार किया है। सामंतवाद, साम्राज्यवाद एवं पूंजीवादी व्यवस्था का विरोध करते हुए मानवता का प्रतिपादन किया है। उन्होंने जनतंत्र एवं जनतांत्रिक व्यवस्था की असलियत का जीतना गहराई से चित्र खींचा है उतना अन्यत्र दुर्लभ है।

मुख्यशब्द :– *पूँजीवाद, जनतंत्र, अस्तित्व संघर्ष, व्यवस्था, शोषण, किसान, राजनीति आदि।*

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 07.07.2019
Approved: 23.09.2019

डॉ. राजेंद्र सोमा घोडे

'संसद से सड़क तक' में जनवादी चेतना

RJPP 2019,
Vol. XVII, No. 2,
pp.15-18
Article No. 3

***Online available at** : http:// rjpp.anubooks.com/*

प्रस्तावना

धूमिल ने अपनी कविताओं के माध्यम से जनसामान्य की भावनाओं आषाओं, षोशित पीड़ित जनता की समस्त असहय यातनाओं का वास्तविक अंकन किया है। समाज की इन विसंगतियों और विडंबनाओं को काव्य में चित्रित करने के कारण धूमिल के काव्य में जनवादी चेतना के विविध रूप उभरकर आए हैं।

शोषण व्यवस्था

अंग्रेजों की शोषण व्यवस्था से भारतीय जनता मुक्त होने के बाद भारत में जनप्रतिनिधियों की व्यवस्था निर्माण हुई। स्वतंत्रता, समता, बंधुता आदि मूल्यों को लेकर सभी को अपने–अपने अधिकार दिए गए। इसके बावजूद भी इस जनतांत्रिक व्यवस्था में पूंजीपति, जमींदार एवं स्वार्थी नेता अपने स्वार्थ के हेतू आम जनता का शोषण करने लगे। इस कारण यह जनतांत्रिक व्यवस्था न रहकर एक प्रकार की शोषित व्यवस्था बन गई थी। जिसमें आम आदमी, मजदूर एवं किसानों का शोषण हो रहा था। यह व्यवस्था इतनी भयावह बन गई थी कि इस व्यवस्था से कवि भी 'भाषा की रात' कविता में भयभीत होते हुए दिखाई देता है–

''यहाँ, मैं भी भयभीत हूँ व्यवस्था की खोह में हर तरफ बूढ़े और रक्तलोलुप मशालची घूम रह हैं।'' [1]

क्योंकि कवि जानता है कि इस व्यवस्था में बदलाव लाने की शक्ति देश के प्रजातंत्र और जननायकों में है, किंतु यह जनता के प्रतिनिधि इसमें सुधार एवं परिवर्तन करने की अपेक्षा अपने स्वार्थ के लिए व्यवस्था को अपने ही अनुकूल बनाने का प्रयास करते हैं। परिवर्तन की अपेक्षा करना व्यर्थ है क्योंकि सब व्यवस्था के पक्ष में चले गए हैं। इसी के प्रति 'नक्सलबाड़ी' कविता में आक्रोश व्यक्त करते हुए कवि कहता है–

''मतलब की इबारत से होकर सब के सब व्यवस्था के प 'संसद से सड़क तक' में जनवादी चेतना–डॉ. राजेंद्र सोमा घोडेक्ष में चले गये हैं।'' [2]

जनता अपनी परिस्थितियों में बदलाव लाने हेतू नेताओं को चूनकर देती हैं लेकिन चुनाव होने के बाद नेता जनता को भूल जाते हैं।

धूमिल देश में स्थापित इस शोषित व्यवस्था का विरोध करते हैं। वे अपनी कविताओं के माध्यम से व्यवस्था में व्याप्त विषमता शोषण एवं अराजकता के प्रति आक्रोश व्यक्त करते हैं। वर्तमान समय में ऐसी व्यवस्था बनी है कि देशभक्त ही भ्रष्टाचारी बन गए हैं। आज विवेकशील और समझदार व्यक्ति के लिए देश में कोई स्थान नहीं रहा है। इसका 'पटकथा' कविता में बहुत अच्छी तरह से चित्रण करते हुए कवि कहता है–

''हर तरफ कुआँ है हर तरफ खाई है यहाँ, सिर्फ, वह आदमी, देश के करीब है जो या तो वह मूर्ख है या फिर गरीब है।'' [3]

इस तरह कवि ने शोषण व्यवस्था पर कड़ा प्रहार किया है।

महँगाई की समस्या

वर्तमान समय में जिस प्रकार जनता महँगाई की समस्या को झेल रही है, उसी तरह 1960–70 के दशक में भारत की आम जनता महँगाई की स्थिति को झेल रही थी। इस महँगाई में आम आदमी का जीना मुश्किल हो रहा था। बड़े–बड़े व्यापारी दुगुने दामों पर हर वस्तु की बिक्री कर रहे थे जिसे खरीदना आम जनता की मजबूरी बन गई थी। इसी स्थिति पर 'शहर का व्याकरण' इस कविता के माध्यम से प्रहार करते हुए कवि कहता है–

''अब हर चीज का एक नाम है लोगों की सुविधा के लिए बनिया–सच्चाई है

यह महँगाई है जिसने बाज़ार को चकमा दिया है।''[4]

इस समस्या को हम वर्तमान समय में भी झेल रहे हैं, क्योंकि उसकी प्रासंगिकता हर समय बनी हुई है।

किसान और मजदूरों की समस्या

जब कोई मनुष्य नेता या मंत्री बन जाता है तब वह किसानों एवं मजदूरों की ओर देखता भी नहीं है। लेकिन जब चुनाव का समय आता है उस समय सब नेता लोग अपनी योजना और वादे तो बड़े–बड़े करते हैं। किंतु चुनाव जीतने के बाद न ही वे किसानों एवं मजदूरों की समस्याएँ मिटाते हैं और न उनकी स्थितियों में परिवर्तन लाते हैं। इसीलिए 'पटकथा' कविता के माध्यम से कवि कहते हैं कि–

''उनकी सख्त पकड़ के नीचे भूख से मरा हुआ आदमी इस मौसम का सबसे दिलचस्प विज्ञापन है और गाय सबसे सटीक नारा है, वे खेतों में भूख और शहरों में अफवाहों के पुलिंदे फेंकते हैं।''[5]

इतना ही नहीं तो नेता या जनप्रतिनिधि जनता की समस्याओं को अनदेखा कर ऐशो आराम से सत्ता का उपयोग करते हुए अपनी जिंदगी बिताते रहे। एक तरफ जनता बेकारी और भूख जैसी समस्याओं से परेशानी थी। आजादी से भारतीय जनता जो आस लगाएँ बैठी थी वह पूरी तरह टूट चुकी थी। नेताओं की स्वार्थ एवं शोषण की नीतियों को देखकर 'पटकथा' कविता में कवि आक्रोशपूर्ण कहता है कि–

''भूख और भूख की आड़ में चबायी गयी चीजों का अक्स उनके दाँतो पर ढूँढ़ना बेकार है समाजवाद उनकी जुबान पर अपनी सूरक्षा का एक आधुनिक मुहावरा है।''[6]

भारतीय जनतंत्र में समाजवाद का नारा लगाया गया था किंतु ऐसा कुछ नहीं हुआ समाजवाद के नाम पर ही जनता का शोषण होता गया।

यथार्थ

धूमिल ने अपनी कविताओं के माध्यम से युगीन परिस्थितियों पर प्रकाश डालते हुए अपनी संघर्ष चेतना को भी व्यक्त किया है। वे कहते हैं कि अब जनता के प्रतिनिधियों को देश

प्रेम, देशभक्ति जैसे शब्द कोई मायने नहीं रखते। नेता तो जनता की समस्याओं की अपेक्षा अणुबम के मसौदों पर ही बहस करते रहते हैं। कवि इसी सत्य को 'शांतिपाठ' कविता में उजागर करते हुए कहते है कि–

"देशप्रेम की भट्ठी जलाकर मैं अपनी ठंडी मांसपेशियों को विदेशी मुद्रा में ढाल रहा हूँ फूट पड़ने के पहले, अणुबम के मसौदे को बहसों की प्याली में उबाल रहा हूँ।"[7]

इस तरह कवि भारतीय जनतंत्र के अतीत, वर्तमान एवं भविष्य के प्रति यथार्थ दृष्टि रखते हुए उसकी विसंगतियों पर प्रहार करते हैं।

इसी प्रकार आजादी के बाद पड़े अकाल से आम आदमी की स्थिति कैसे हो गई थी। रोटी मिलने के लिए उनको कितना प्रयास करना पड़ता था। इसका बहुत अच्छी तरह से चित्रण 'पटकथा' कविता में करते हुए कवि कहता है–

"सूनो। आज मैं तुम्हें वह सत्य बतलाता हूँ जिसके आगे हर सच्चाई छोटी है।

इस दुनिया में भूखे आदमी का, सबसे बड़ा तर्क रोटी है।"[8]

इस प्रकार धूमिल ने अपनी कविताओं के माध्यम से जनता की चेतना को प्रकट किया है।

अत हम ऐसा कह सकते है कि धूमिल ने अपने काव्य में अन्याय के विरोध में आवाज उठाते हुए नए जनवादी जनतंत्र की तलाश करने का सफल प्रयास किया है। आम आदमी के अभावों एवं विसंगतिपूर्ण जीवन की बड़ी सटीक अभिव्यक्ति उनके काव्य में हुई है। इतना ही नहीं तो जनतांत्रिक व्यवस्था का वास्तविक चित्रण उन्होंने अपने काव्य के माध्यम से किया हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. संसद से सड़क तक–धूमिल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 1997, पृ. 92
2. वही, 67
3. वही, 106
4. वही, 57
5. वही, 110
6. वही, 126
7. वही, 24
8. वही, 114